www.thearyasamaj.org

ओ३म्

# आर्य्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प – आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क, जयपु

वर्ष: 88 अंक 7
पौष शुक्ला पंचमी
विक्रम संवत 2070
कलि संवत 5115
5 जनवरी से 21 जनवरी 2014 तक
दयानन्दाब्द 189
सृष्टि सम्वत् 1, 96, 08, 53, 114
**मुख्य सम्पादक :**
**पं. अमर सिंह आर्य,** 9214586018
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
**संपादक मंडल:**
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजय सिंह भाटी, जोधपुर
डॉ. सुधीर आर्य, बगरू
आर्य शिरोमणि पं. विनोदी लाल दीक्षित
श्री हरिपाल शास्त्री, अलवर
श्री ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
श्री अर्जुन देव चड्ढा, कोटा
श्रीमती अरूणा सतीजा, जयपुर
श्री सत्यपाल आर्य, अलवर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य, अलवर
**प्रकाशक:**
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
राजापार्क, जयपुर
दूरभाष- 0141-2621879
**प्रकाशन:** दिनांक 1 व 15
**पत्र व्यवहार का अस्थाई पता**
**अमर मुनि वानप्रस्थी**
**सम्पादक आर्य मार्तण्ड, सेठ का टीला**
**केडलगंज, अलवर (राज.)**
**मोबाईल- 9214586018**
**मुद्रक:**
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशियेट्स,जयपुर
**ग्राफिक्स :**
**भार्गव प्रिन्टर्स, दासकूटा, अलवर**
Email: bhargavaprinters@gmail.com
Email:aryamartand@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया

## अंक सौजन्य- आर्य समाज रामपुरा कोटा (राज.)

## मादक पदार्थों के सेवन से युवा पीढ़ी का जीवन हो रहा है बरबाद

## हेरोइन और स्मैक का कारोबार राजस्थान में जोरों पर-

ताजा जानकारी से यह बात सामने आई है कि राजस्थान हेरोइन और स्मैक के कारोबार का सबसे बड़ा अड्डा बनता जा रहा है। यहाँ से श्रीलंका, साउथ अफ्रीका, मोजांबिया, चीन, नीदरलैंड सीरिया, स्पेन, यू.एस.ए., आस्ट्रेलिया आदि देशों को मादक पदार्थों की सप्लाई होती है। साथ में भारत के अधिकांश पर्यटक स्थल जहाँ विदेशी सैलानी आते हैं वहाँ नशेडियों के अड्डे बने हुए हैं इन स्थानों पर न केवल ड्रग्स का कारोबार होता है अपितु स्कूल और कॉलेजों की कैन्टीनों में नशीले पदार्थ पकड़े गये है। वहाँ के मैनेजमेंट को कैन्टीन बन्द करने पड़े। अब ये कॉलेजों के बाहर सप्लाई किये जाते है। इस तरह नई पीढ़ी भांग , गाजा, चरस एवं स्मैक की आदी होती चली जा रही है। नशे के आदि लोग चोरी, डकैती एवं व्यभिचार में लिप्त हो रहे है।

प्रशासन के द्वारा इन्हें रोकने का कोई ठोस कदम नहीं उठाया जा रहा है। हाल ही में जोधपुर में एक ड्रग्स सप्लाई करने वाले व्यक्ति को पकडा उसके मोबाइल से ड्रग्स के सरगना का नम्बर प्राप्त किया। उस नम्बर पर फोन करने पर उधर से हलो की आवाज आई उसे शक हो गया और फोन बंद कर दिया लेकिन आज तक सरगना नहीं पकड़ा जा सका।

21 जून को जोधपुर में ही 16 किलो अफीम के साथ एक व्यक्ति को पकड़ा। पुलिस के धमकाने पर पता चला कि वह अफीम मध्य प्रदेश से लाता है और राजस्थान में सप्लाई करता है। उसके बताये गये ठिकाने पर छापा मारा तो मादक द्रव्यों का सरगना वहां से भाग निकला। इसी प्रकार हनुमानगढ़ जिले में भी 16 किलो 800 ग्राम अफीम के साथ तस्कर को पकड़ा लेकिन आज तक कोई सरगना पकड़ा नहीं जा सका। ये कैसी विडम्बना है। छोटे-मोटे ड्रग्स सप्लायर तो पकड़े जाते है लेकिन बड़े-बड़े तस्कर जो इस अनैतिक धन्धे की जड़ हैं वे नहीं पकड़े जाते। इसमें या तो प्रशासन की ढिलाई लगती है या सरकार की सरगनाओं से सांठ-गाँठ। ये राजस्थान के अलावा अन्य प्रान्तों में भी जैसे चेन्नई, जम्मू और बम्बई आदि में भी व्यापक रूप से फैला हुआ है। हाल ही में देहली पुलिस ने 150 करोड की हिरोइन व कोकीन दिल्ली के अवतार सिंह ( 48 ) से बरामद की और उसे गिरफ्तार किया। जाहिर है ये धन्धा कोई एक या दो साल में तो नहीं पनपा होगा, यह तो काफी समय से अपनी जड़ जमाए हुए है कई सरकारें आई और गई लेकिन किसी ने भी नई पीढ़ी को गैरत में गिरने की चिन्ता नहीं की। सत्ता और सम्पति के लोलुप नेता अपनी स्वार्थ सिद्धि में ही लगे रहे। आज पूरा भारत नशे की गिरफ्त में आता जा रहा है। शराब की तो खुली छूट पहले ही थी अब दूसरे नशों के आदी लोग बढ़ते जा रहे है। किसी को भी भावी पीढ़ी के भविष्य की चिन्ता नहीं है। नई पीढ़ी आर्थिक-मानसिक और सामाजिक रूप से कमजोर होती जा रही है एवं अपराध में लिप्त हो रही है।

ऐसे में कुछ संस्थाओं को मिलकर आगे आकर इस बढ़ती हुई नशा खोरी के खिलाफ आवाज बुलन्द करनी चाहिए। इसको रोकने के कारगर प्रयासों की ओर सरकार का ध्यान आकृष्ट करना चाहिए।

अमर मुनि



पुस्तकों का मूल्य रत्नों से भी अधिक है, क्योंकि पुस्तके अन्त:करण को उज्ज्वल करती हैं। महात्मा गाँधी

www.thearyasamaj.org

# भविष्य के लिए नया संकेत

राजस्थान में 14वीं विधान सभा के चुनाव कई मायनों में बहुत कीर्तिमान स्थापित करने वाले सिद्ध हुए है। यह पहला मौका है जब सत्तारुढ़ दल कांग्रेस का अल्पसंख्यक समुदाय से संबंधित एक भी प्रत्याशी पूरे प्रदेश में कहीं से भी नहीं जीत पाया। जो मुस्लिम व मेव मतदाताओं के गढ़ कहे जाते है और जिन प्रत्याशियों को दिग्गज व महाबली माना जाता रहा, उन्हें भी मतदाताओं ने धूल चटा दी। मेवात क्षेत्र के अलवर जिले में चिकित्सा मंत्री जैसे महत्वपूर्ण पद पर काबिज रहे दुरुमियां खान जहां तीसरे स्थान पर सिमट गए वहीं अ.भा. कांग्रेस कमेटी के सदस्य जुबेर खान भी पटकनी खा गए। सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि जिस कांग्रेस ने हमेशा अल्पसंख्यक समुदाय को अपना कट्टर समर्थक माना और भाजपा को हमेशा साम्प्रदायिक दल बताते हुए उनके बीच घृणा व द्वेष की दीवारें खड़ी की, उस भाजपा के टिकट पर 2 अल्पसंख्यक जीत कर आ गए और कांग्रेस एक भी अल्पसंख्यक की लाज नहीं बचा पाई। यही नहीं कांग्रेस के अलावा बसपा, सपा, जनता दल (यू) व वामपंथी जैसे दल जो हमेशा अल्पसंख्यकों को अपना वोट बैंक मानते रहे और जिन्होंने राज्य में अनेक जगह ऐसे प्रत्याशियों को चुन-चुन कर उन्हीं के बाहुल्य वाले क्षेत्रों में पार्टी के टिकट देकर चुनावी रणक्षेत्र में जोरशोर से उतारा, उन सबकी भी बुरी तरह से हार हुई। उनके क्षेत्रों में गैर अल्पसंख्यक समुदाय और वह भी भाजपा जैसे तथाकथित साम्प्रदायिक दल के नुमाइन्दों की जीत ने वाकई जो नया पैगाम दिया है, उससे भविष्य में जाति-धर्म-सम्प्रदाय के नाम पर राजनीति करने वालों को एक नया सबक मिलेगा। जाहिराना तौर पर इसमें कोई दो राय नहीं कि चुनाव परिणाम कांग्रेस के लिए जहां सबसे अनिष्टकारी सिद्ध हुए वहीं भाजपा के लिए अभूतपूर्व कीर्तिमान स्थापित हुआ। आजादी के बाद से आज तक कांग्रेस इतनी बुरी तरह से कभी नहीं हारी जितनी इस दफा ओंधे मुंह होकर गिरी है। 33 में से 17 जिलों में एक भी प्रत्याशी का न जीतना, 22 मंत्रियों का एक साथ हारना और खुद कांग्रेस के प्रदेश प्रमुख डॉ. चन्द्रभान की बुरी तरह से पराजय व जमानत तक जप्त होने की स्थिति यह साफ संकेत देती है कि मतदाता अब बहुत विवेकी व जागरूक हो गया। उसके चुप रहने का मतलब यह नहीं है कि वह कुछ नहीं जानता वरन् उन लोगों को अपनी गलती का मूल्यांकन व प्रायश्चित करना चाहिए जो मतदाताओं को अपनी जेब में रखा हुआ वोट बैंक समझकर अहंकार के मद में निरंकुश हो चुके थे। घमण्ड जिनके सिर चढ़ चुका था और कार्यकर्ता व प्रजा को जो अपनी अंगुली पर नचाने वाला मान बैठे थे, उनकी दुर्गति होनी ही थी। राजस्थान के इस नए कीर्तिमान ने कई भ्रम तोड़े है। साम्प्रदायिकता का हव्वा खड़ा कर अपनी स्वार्थ सिद्धि की पूर्ति करने वालों का नकाब खींच दिया। जाति-धर्म के वैमनस्य को हथियार बनाकर कट्टरता पनपाने की साजिशों को धो डाला। सबसे ऐतिहासिक बात यह प्रकट हुई है कि कथित साम्प्रदायिक दल में अल्पसंख्यकों का भी 'कमल' खिला है और अपने को धर्मनिरपेक्ष मानने वालों के बीच सारे अल्पसंख्यक मात खा गए। यह भविष्य के लिए एक नया संकेत और शुभ प्रभात की नई फिजा है।

उधर, पांच राज्यों के चुनावों में दिल्ली के लोगों ने इस बार जो नया करिश्मा करके दिखाया, वह पूरे भारत में ही नहीं वरन् विश्व के अनेक देशों में चर्चा का विषय बना। मात्र ग्यारह महीने पहले बनी आम आदमी पार्टी (आप) ने हकीकत में जिस तरह राजधानी में 'झाड़ू' लगाई, उससे कांग्रेस व भाजपा जैसी वर्षो-वर्षो से काबिज पार्टियों की हवा निकल गई। कांग्रेस का जहां हकीकत में सूपड़ा साफ हो गया। वहीं भाजपा इसलिए फुस्स हो गई कि उसे सत्ता के सिंहासन पर बैठने से रोक दिया। 'आप' के मुट्ठी भर लोगों का कभी कोई राजनीतिक अनुभव नहीं रहा। उन्होंने इससे पहले कभी चुनाव भी नहीं लड़ा। सत्ता कैसे हथियाई या उखाड़ी जाती है, उसकी तिकड़मबाजी का भी उन्हें कोई अनुभव नहीं रहा। जुम्मा-जुम्मा राजनीति की ए.बी.सी.डी. मात्र कुछ दिनों से ही पढ़ने लगे थे लेकिन दिल्ली के चुनावी नतीजों में जो भूचाल आया, वह इतिहास के पन्नों में अविस्मरणीय रहेगा। दिल्ली भारत की सिरमौर है और उसके जागरूक लोगों ने यह दर्शा दिया कि चुनाव के लिए धनबल, बाहुबल, जातिवाद, वंशवाद, पिछला पुराना गौरवशाली इतिहास, भरपूर विकास, राजनैतिक परिपक्वता का होना जरूरी नहीं है बल्कि ईमानदारी, निर्भीकता और भ्रष्टाचार के विरूद्ध जंग के बल पर भी फतह पाई जा सकती है। 'आप' के सर्वेसर्वा अरविन्द केजरीवाल दिल्ली की मौजूदा सर्वशक्तिशाली सत्ताधीश शीला दीक्षित के लिए इतने भारी पड़ेंगे, किसी ने सपने में भी कभी ऐसा नहीं सोचा होगा। चुनाव से पहले शीला दीक्षित व सुषमा स्वराज जिस केजरीवाल को नौसिखिया व बड़बोला बताकर उसकी पार्टी 'आप' की खिल्ली उड़ा रही थी, उस 'आप' की 'झाड़ू' ने पूरी दिल्ली में ऐसी सफाई की है कि दोनों ही दल भौचक्के रहकर अब शून्य में तांकने को विवश हुए है। यह जग जाहिर था कि भाजपा के पास नरेन्द्र मोदी और कांग्रेस के पास सोनिया गांधी-राहुल जैसे स्टार प्रचारक थे और उन्होंने दिल्ली में अपनी दहाड़ गुंजाने में कोई कसर भी नहीं छोड़ी। इसके विपरीत अरविंद केजरीवाल बिलकुल अकेले थे। उन्हें दोनों दलों ने अभिमन्यु की तरह चक्रव्यूह में फँसाकर मारने की कोई कसर भी नहीं छोड़ी। काश! केजरीवाल के साथ अन्ना हजारे जैसे भीष्म पितामह होते तो दिल्ली की रंगत फिर कुछ और ही होती। फिर शायद त्रिशंकु जैसे हालात ही नहीं बन पाते। फिर भी केजरीवाल व उनकी उत्साही टीम को दिल्ली के मतदाताओं ने अपने दिल में जो जगह दी और खुलकर उन्हें नवाजा, वह भारतीय लोकतंत्र में इस लिहाज से शुभ संकेत है कि सियासी जंग बिना तामझाम व बिना धन-बल के भी जीती जा सकती है। यह कौन नहीं जानता कि चाहे कांग्रेस हो या भाजपा, उन्होंने चुनावी दंगल फतह करने के लिए करोड़ों-करोड़ों रूपए पानी की तरह बहाए। पर्दे के पीछे बड़े-बड़े घरानों से खूब धन बटोरा गया और उधर केजरीवाल की संभवतः भारत में पहली पार्टी है जिसने चुनाव लड़ने के लिए जितना भी चंदा लिया, उसका पाई-पाई का हिसाब वक्त से पहले ही नहीं बल्कि 20 करोड़ का अपना लक्ष्य पूरा होते ही चंदा लेना तक बंद कर दिया। जहां पूरा चुनाव लड़ने के बाद भी 'आप' के पास 20 करोड़ में से भी काफी धन शेष बच गया, वहीं भाजपा और कांग्रेस में ऐसे-ऐसे प्रत्याशी थे जिन्होंने अकेले ही 10-10 करोड़ रूपए खर्च कर डाले। इन सब हालात में 'आप' की फतह सन् 1977 में हुई युवा क्रांति की प्रतीक है लेकिन 'आप' को अब बहुत संभल कर चलना होगा। अपने आदर्श, नैतिक मूल्य व भ्रष्टाचार के विरूद्ध जेहाद को सिर्फ याद नहीं रखना वरन् उस पर कायम रहकर कदम आगे बढ़ाने होंगे। तभी तो पूरे देश में 'झाड़ू' गंदगी की सफाई कर पाएगी। -ओमप्रकाश गुप्ता, अलवर



राह भले ही पथरीली हो, यात्रा कष्टदायक हो। सफलता का दिन दूर हो सकता है, लेकिन उसका आना अनिवार्य है। सुभाषचंद्र बोस

www.thearyasamaj.org

# आर्य समाज के प्राज्ञ पुरुष

## दार्शनिक साहित्यकार- पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय

वेद, उपनिषद्, स्मृति, धर्म, दर्शन जैसे विभिन्न विषयों पर विशद तथा सन्तुलित लेखन के लिए यदि किसी लेखक का नाम लिया जाता है तो वे हैं गंगा प्रसाद उपाध्याय। 6 सितम्बर 1881 को एटा जिले के नदरई ग्राम में एक मध्यवित्त गृहस्थ श्री कुञ्जबिहारीलाल के यहाँ जन्म लेनेवाले गंगाप्रसाद ने स्वयं को 'उपाध्याय' के पद से उस समय ख्यात किया जब वे स्वल्पकाल के लिए गुरुकुल कांगड़ी में अध्यापक रहे थे। मनुस्मृति में वह व्यक्ति 'उपाध्याय' कहा गया है जो वेतन लेकर अध्यापन करता है। उपाध्यायजी ने अंग्रेजी तथा दर्शन में एम.ए. की परीक्षाएँ क्रमशः 1908 तथा 1912 में पास की। आरम्भ में वे संयुक्त प्रान्त के स्कूलों में अध्यापन करते रहे। इसी दौरान जब उन्होंने शिक्षण कार्य का प्रशिक्षण लिया तो हिन्दी के कथाकार मुंशी प्रेमचन्द उनके सहपाठी थे। 1918 से 1936 तक डी.ए.वी. हाईस्कूल इलाहाबाद के प्रधानाध्यापक रहने के पश्चात् उन्होंने नौकरी से अवकाश ले लिया और अवशिष्ट जीवन आर्यसमाज हेतु अर्पित कर दिया। वे आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रांत के प्रधान ( 1941-1944 ) रहे, सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान ( 1943 ) तथा मंत्री ( 1946-51 ) भी रहे। जीवन के उत्तरार्द्ध में वे अफ्रीका, थाईलैंड तथा सिंगापुर में धर्म प्रचारार्थ गये। 19 अगस्त 1968 को 87 वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ। अपनी पत्नी कलादेवी के नाम से उन्होंने इलाहाबाद में कला प्रेस की स्थापना की तथा अनेक ग्रंथों का प्रकाशन किया। उनकी आत्मकथा 'जीवनचक्र' के नाम से छपी है। प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु ने उनका जीवन-चरित 'व्यक्ति से व्यक्तित्व' शीर्षक से लिखा है।

पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय जी के निधन के पश्चात् आर्य समाज चौक प्रयाग ने उनकी स्मृति में ''उपाध्याय स्मारक साहित्य पुरस्कार'' आरम्भ किया जो श्रेष्ठ आर्य लेखक को दिया जाता है।

यदि कोई मुझसे पूछे कि आर्यसमाज में सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार कौन है तो मैं निश्चितरूप से पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय का नाम लूँगा । साहित्य केवल कविता, कहानी और उपन्यास का ही नाम नहीं है। वह सारा लोक साहित्य के अंतर्गत समाविष्ट किया जा सकता है, जिससे व्यक्ति भावनात्मक रूप से प्रभावित होता है, उसके हृदय में आनन्द और उल्लास का उद्वेग होता है, जिसको पढ़कर उसके ज्ञान की वृद्धि होती है तथा उसके बौद्धिक क्षितिज का विस्तार होता है। यदि महाभाष्य के लेखक पतञ्जलि, ब्रह्मसूत्र भाष्य प्रणेता आचार्य शंकर तथा ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के रचयिता दयानन्द सरस्वती को साहित्यकारों की श्रेणी में परिगणित किया जा सकता है तो कोई कारण नहीं कि गंगाप्रसाद उपाध्याय के लेखन को साहित्य न माना जाये। उनका लेखन एक नहीं, अपितु चार भाषाओं में हमारे समक्ष है। हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू तथा संस्कृत में समानरूप से ग्रंथ रचना करना असाधारण प्रतिभा एवं कौशल से ही संभव है।

पं. उपाध्यायजी से मेरा प्रत्यक्ष साक्षात्मकार केवल एक बार हुआ, जब 1959 के दिसम्बर मास में मथुरा में आयोजित दयानन्द दीक्षा शताब्दी के अवसर पर उनका तथा उनके नामराशी पं. गंगाप्रसाद जज का नागरिक अभिनन्दन आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा पं. प्रकाशवीरजी के संयोजकत्व में किया गया था। इस आयोजन की अध्यक्षता तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद ने की थी। इस अवसर पर उपाध्यायजी को जो अभिनन्दन ग्रंथ भेंट किया गया था, उसमें मेरा भी एक लेख था, जो मुख्यतः उनके साहित्यिक अवदान को लेकर लिखा गया था। उपाध्यायजी के दामाद प्रो. प्रेमबहादुर वर्मा ( सुदक्षिणाजी के पति ) मेरे नगर जोधपुर के जसवंत कॉलेज में भौतिकी के प्राध्यापक थे और मैंने उनसे आग्रह किया था कि मथुरा में वे मुझे उपाध्यायजी से भेंट करने की सुविधा उपलब्ध करा दें। जब यह अवसर आया तो उपाध्याय-गृहिणी श्रीमती कलादेवी भी वहीं विराजमान थीं और इस प्रकार उपाध्याय दम्पती के प्रथम और अंतिम बार दर्शन का लाभ मुझे मिला। 6 सितम्बर 1881 को जन्में गंगाप्रसाद जी की मृत्यु 29 अगस्त 1968 को इलाबाद में हुई थी।

चर्चा के प्रसंग में मैंने अपनी पाण्डुलिपि 'स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्दः तुलनात्मक अध्ययन' के कुछ अवतरण उन्हें पढ़कर सुनाये। उनकी सामान्य प्रतिक्रिया थी कि स्वामी दयानन्द और विवेकानन्द की तुलना अकादमिक दृष्टि से भले ही की जाये, दयानन्द का अवदान किसी अन्य समकालीन से कहीं अधिक हैं और इस प्रकार वे अनुपमेय हैं। दोनों महापुरुषों की वैचारिक तुलना के प्रसंग में जब 'मूर्तिपूजा' का अध्याय आया, जिसमें मैंने उपाध्यायजी के अंग्रेजी ग्रंथ 'वर्शिप' के कुछ उद्धरणों के अनुवाद को प्रस्तुत किया था तो उपाध्यायजी ने मेरी अनुवाद करने की क्षमता की सराहना की। उन्होंने मुझे देखकर अपनी प्रथम प्रतिक्रिया के रूप में कहा था- मैंने तो आपके लेखन से अनुमान लगाया था कि भारतीय जी प्रौढ़, परिपक्व आयु के वृद्ध पुरुष होंगे, आप तो अच्छे खासे युवा हैं ( उस समय मेरी आयु इकत्तीस वर्ष की थी )। उपाध्यायजी से यह भेंट मेरे लिए बहुमूल्य प्रसंग था। सार्वजनिक समारोह में जब उपाध्याय जी को अपने विचार रखने के लिए कहा गया तो उनकी विनम्रता देखने योग्य थी। उन्होंने कहा कि साहित्यकार को अपने जीवन में सम्मान मिले, यह उसके लिए एक उपलब्धि ही है। कालिदास, शेक्सपियर और तुलसीदास का स्वजीवन में कब अभिनन्दन और सम्मान किया गया था? आर्य समाज के इतिहास में भी किसी लेखक का यह प्रथम अभिनन्दन था।

पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के प्रसिद्ध ग्रंथ 'आस्तिकवाद' का नाम मैंने बचपन में कब और कैसे सुना, यह बताना आज मेरे लिए कठिन है। इतना जरूर है कि एक जातीय पत्रिका 'उषा' में मैंने उपाध्यायजी के जीवन का एक रेखाचित्र पढ़ा था। बाद में 1945 में जोधपुर में विधिवत् आर्यसमाज से सम्बद्ध हो जाने के बाद उपाध्याय-साहित्य को पढ़ने का सिलसिला जारी हुआ जो वर्षों तक चला। इस बीच एक दिन जब देखा कि मेरी जेब में सदा रुपया पॉकेट मनी के रूप में जमा है तो मैंने आर्यसमाज के उत्सव पर बाहर से आये पुस्तक विक्रेता से उनकी पुस्तक 'मैं और मेरा भगवान' खरीद ली। यह उनकी अंग्रेजी कृति 'I and my God' का स्वामी वेदानन्द तीर्थ कृत अनुवाद था, जिसे राजपाल एण्ड

www.thearyasamaj.org

संस लाहौर ने छपवाया था। पुस्तक तो खरीद ली और जब उसे पढ़ना आरम्भ किया तो वहाँ शुरू में ही कुछ यूरोपीय दार्शनिकों के विचारों की चर्चा देखी। देकार्ते, कान्ट आदि नाम मेरे लिए अपरिचित थे और आगे के अध्यायों के विषय भी दुरूह लगे। तथापि 'कुछ लुभावने हेत्वाभास' के शीर्षक मुझे रोचक लगे जहाँ स्वामी विवेकानन्द द्वारा अद्वैतवाद की पुष्टि में दिये गये कतिपय हेतुओं को लेखक द्वारा हेत्वाभास सिद्ध किया गया है।

'आस्तिकवाद' उपाध्याय जी की महत्वपूर्ण दार्शनिक रचना है। 1931 में इस पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने लेखक को मंगलाप्रसाद पुरस्कार प्रदान किया था। इस प्रकार इस ग्रंथ की साहित्यिक महत्ता को सार्वजनिक स्वीकृति मिली। जब मैंने इसे पढ़ना आरम्भ किया तो कवर पृष्ठ पर श्वेताश्वतरोपनिषद् का निम्न मंत्र दृष्टिगत हुआ-

स्वभावमेके कवयो वदन्ति कालं तथान्ये परिमुह्यमानाः।
देवस्य एषः महिमा तु लोके येनेदं भ्राम्यते ब्रह्मचक्रम्।।

यह सृष्टिचक्र क्यों चल रहा है? इसके संचालन में कौनसी शक्ति कार्यरत है? कुछ विद्वानों का कहना है कि सृष्टि स्वतः ही गतिशील है। यह इसका स्वभाव है। अन्य बुद्धिमानों का मानना है कि काल ही इस सृष्टि को संचालित कर रहा है, किन्तु उपनिषद्कार ऋषि की सम्मति में उस परमदेव परमात्मा की महिमा ( शक्ति ) से यह महद् सृष्टिचक्र अद्यावधि चल रहा है और प्रलय पर्यन्त इसी प्रकार गतिशील रहेगा। इस ग्रंथ में वेद, उपनिषद् तथा दर्शनों में प्रतिपादित ईश्वरवाद को लेखक ने अनेक युक्तियों, प्रमाणों तथा तर्कनाओं से सिद्ध किया है तथा अद्वैतवाद मायावाद, जड़वाद, स्वभाववाद आदि मतों का युक्तिपूर्वक खण्डन किया है। ईश्वर की परात्पर सत्ता को सिद्ध करने में यदि संस्कृत में उदयनाचार्य की 'न्याय कुसुमाञ्जलि' को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है तो हिन्दी में 'आस्तिकवाद' को इस विषय का मील का पत्थर माना जायेगा।

'आस्तिकवाद' ( 1926 ) के बाद 1928 में 'अद्वैतवाद' का प्रकाशन हुआ। इसका कुछ अंश प्रसिद्ध मासिक पत्रिका माधुरी में छपा। नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ की इस विख्यात पत्रिका के उस समय सम्पादक मुंशी प्रेमचन्द थे। प्रेमचन्द जी की उपाध्यायजी से पुरानी जान-पहचान थी। दोनों ने इलाहाबाद से ट्रेनिंग ( संभवतः एल.टी. ) का कोर्स साथ-साथ किया था। प्रेमचन्दजी ने कथा साहित्य में पाँव रखा तो उपाध्यायजी ने दर्शन को अपना विषय बनाया। धारावाहिक लेखमाला 'अद्वैतवाद' में शंकराचार्य के 'एक ब्रह्मवाद' की आलोचना आना स्वाभाविक था। अकारण द्वेष करने वालों को यह लेखमाला ब्राह्मण दार्शनिक शंकर की निंदा-कुत्सा में लिखी एक कायस्थ लेखक ( गंगाप्रसाद उपाध्याय कुलश्रेष्ठ कायस्थ थे ) की हिमाकत जान पड़ी। इन लोगों ने बिना देर किये माधुरी तथा नवलकिशोर प्रेस के स्वामी भार्गव बंधुओं तक अपनी फरियाद पहुँचाई और कायस्थ संपादक प्रेमचन्द तथा कायस्थ लेखक गंगाप्रसाद उपाध्याय को यह आरोप लगाते हुए कटघरे में खड़ा किया कि 'अद्वैतवाद' के प्रत्याख्यान के द्वारा ये लेख ब्राह्मण विद्वेष को उजागर करते हैं, जबकि वस्तुतः ऐसा कुछ नहीं था। लेखमाला को तुरन्त बंद कर दिया गया। संभवतः प्रेमचन्द भी इसके बाद माधुरी का संपादन छोड़कर अपने पुराने आशियाने बनारस चले गये और स्वतंत्ररूप से लेखन में लग गये। कट्टरपंथी ब्राह्मण लॉबी को 'अद्वैतवाद' में प्रस्तुत तर्क पसन्द चाहे न आये हों, इस ग्रंथ में प्रस्तुत ब्रह्मैक्यवाद तथा मायावाद का खंडन आज भी उतना ही प्रबल रूप से प्रासंगिक है, जितना तब था।

जीवात्मा की स्वतंत्र तथा निरपेक्ष सत्ता को स्थापित करनेवाला ग्रंथ 'जीवात्मा' 1933 में प्रकाशित हुआ। जीवेश्वर भेद का प्रतिपादक 'आई एण्ड माई गौड' रिलिजियस रेनांसा सिरीज में छपा था, जिसके हिन्दी अनुवाद की चर्चा पहले की जा चुकी है। शंकर मत का खण्डनपरक प्रौढ़ ग्रंथ 'शाङ्कर भाष्यालोचन' 1947 में छपा इसे उपाध्यायजी के अद्वैतवाद मत खण्डनपरक ग्रंथों में मूर्धास्थानीय कहा जा सकता है। ब्रह्मसूत्र के शाङ्कर भाष्य की यह सटीक आलोचना है।

वस्तुतः चार भाषाओं में निबद्ध उपाध्याय साहित्य का समग्र विवेचन एक स्वतंत्र शोध ग्रंथ की अपेक्षा रखता है। उनके लेखन कर्म का आरम्भ धर्म, दर्शन, आर्यसमाज आदि उनके पश्चातवर्ती विषयों से भिन्न कोटि का था। बहुत कम लोगों को पता है कि इलाहाबाद के एक प्रकाशक के आग्रह से उपाध्यायजी ने हिन्दी व्याकरण पर एक पुस्तक लिखी थी। 1908 में अंग्रेजी में एम.ए. करने वाले गंगाप्रसाद का शेक्सपियर की ओर आकृष्ट होना स्वाभाविक था। उन्होंने शेक्सपियर की सभी नाट्यकृतियों ( शोंकांत, दुःखांत तथा ऐतिहासिक नाटक ) को धारावाही हिन्दी कथा के रूप में लिख डाला। शेक्सपियर का यह समग्र गद्यानुवाद छः खण्डों में रामनारायणलाल पुस्तक प्रकाशक इलाहाबाद ने प्रकाशित किया था। इस ग्रंथमाला पर लेखक का नाम मात्र 'गंगाप्रसाद' ही अंकित है। तब उन्होंने स्वयं को 'उपाध्याय' कहलाना आरम्भ नहीं किया था। बहुत बाद में जब स्वामी सत्यप्रकाश ने अपने पिता की इस विश्रुत कृति को दुबारा छापने का विचार मेरे सामने रखा तो मैंने एक पुराने पुस्तकालय से शेक्सपियर के छहों भाग स्वामी को उपलब्ध कराये, जिन्हें गोविन्दराम हासानन्द के संचालक स्व. विजयकुमार ने पुस्तकायन ( प्रकाशन ) से 1975 में 3 खंडों में प्रकाशित किया। अंग्रेजी में शेक्सपियर की नाट्यकृतियों को धारावाही गद्य में चार्ल्स लैम्ब ने 'टॉल्स फॉर्म शेक्सपियर' नाम से प्रस्तुत किया है, जो अंग्रेजी साहित्य की एक प्रख्यात रचना मानी जाती है। खेद है कि शेक्सपियर की समस्त रचनावली को हिन्दी गद्य में रूपान्तरित करने वाले पं. गंगाप्रसाद का नोटिस किसी इतिहासकार ने नहीं लिया। कालान्तर में शेक्सपियर के नाटकों के विभिन्न अनुवाद अवश्य छपे। ये अनुवाद बच्चन तथा रांगेय राघव ने किये हैं।

वैदिक साहित्य- उपाध्यायजी के साहित्य की विवेचना विभिन्न शीर्षकों के अंतर्गत की जा सकती है। सर्वप्रथम उनके द्वारा रचित वैदिक साहित्य की चर्चा करें। उन्होंने ऐतरेय तथा शतपथ ब्राह्मण का हिन्दी अनुवाद किया जो यद्यपि शब्दानुवाद मात्र है, तथापित हिन्दी में इसे प्रथम प्रयास कहा जायेगा। दैनिक स्वाध्याय के लिए उपयोगी वेद प्रवचन, ईशोपनिषद् का भाष्य, उपनिषदों में आये आख्यानों का कथात्मक निरूपण-भगवत् कथा, वैदिक मणिमाला तथा वैदिक कल्चर इस श्रेणी के अन्य ग्रंथ हैं। सायण तथा स्वामी दयानन्द ( 1957 में प्रकाशित ) ग्रंथ दोनों भाष्यकारों की वेदार्थ विषयक मौलिक अवधारणा को व्याख्यात करता है।



इस दुनिया का एकमात्र सच ज्ञान है और एकमात्र बुराई अज्ञानता। मैथिली शरण गुप्त

www.thearyasamaj.org

तुलनात्मक अध्ययन- समानधर्मा महापुरुषों की वैचारिक तुलना उनके मन्तव्यों और सिद्धांतों के विस्तृत ज्ञान की अपेक्षा रखती है। इस श्रेणी के ग्रंथों में 'शंकर-रामानुज-दयानन्द' जहाँ तीनों के दार्शनिक विचारों की तुलना है, वहाँ 'राममोहन राय-केशवचन्द्र सेन-दयानन्द' भारतीय पुनर्जागरण के इन उन्नायकों का वैचारिक मूल्यांकन है। गौतम बुद्ध की 2500वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर उपाध्यायजी का अंग्रेजी ग्रंथ **Social Reconstruction by Buddha and Dayanand 1946** में छपा। अपने विषय का यह प्रथम ग्रंथ है।

प्रचारात्मक साहित्य- एक समय था जब भारत में ईसाई मिशनरियों की सोसाइटियाँ लघु पुस्तिकाओं के माध्यम से अपने मत का धूम-धड़ाके से प्रचार करती थीं। उनका यह कार्य उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ से ही चल पड़ा था। मेलों, बाजारों तथा अन्य मानव समागमों में ईसाइयों के ये लघु ट्रैक्ट मुफ्त में बाँटे जाते थे। उपाध्यायजी ने इसी तर्ज पर वैदिक धर्म से सम्बन्धित लघु ट्रैक्ट लिखकर प्रकाशित करने का एक बृहत् अभियान आर्यसमाज चौक प्रयाग के द्वारा आरम्भ किया। 12 तथा 16 पृष्ठोंवाल पचासों ट्रैक्ट उन्होंने स्वयं लिखे तथा अल्प मोल ( मात्र एक आना ) में इनकी बिक्री तथा वितरण की व्यवस्था की। हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी, गुजराती तथा उर्दू में भी ये ट्रैक्ट छपे। उपाध्यायजी के लेखन की यह विशिष्टता रही कि वे जहाँ जनसाधारण के लिए सरल भाषा में वैदिक सिद्धांतों का निरूपण करने की क्षमता रखते थे, वहाँ गूढ दार्शनिक प्रश्नों का प्रसादपूर्ण शैली में विवेचन करने में उनका कोई सानी नहीं था। आर्य समाज, स्वामी दयानन्द, वैदिक कर्मकाण्ड जैसे विषयों के अतिरिक्त उन्होंने जिन स्फुट विषयों पर लिखा वे है- आहार विवेचन ( हम क्या खायें? घास या मांस ), कम्युनिज्म, धम्म पद का हिन्दी अनुवाद तथा अनेक शास्त्रीय प्रमाणों से युक्त विधवा विवाह के समर्थन में लिखा गया ग्रंथ 'विधवा विवाह मीमांसा' उनकी प्रारम्भ की कृति ( 1920 में प्रकाशित ) है।

जैसा कि लिखा जा चुका है, उपाध्यायजी ने अंग्रेजी में पर्याप्त मात्रा में लिखा, दूसरों से लिखवाया तथा बहुसंख्या अंग्रेजी पाठकों तक इस साहित्य को पहुँचाया। 1939 में उन्होंने आर्यसमाज चौक इलाहाबाद के तत्वावधान में एक अंग्रेजी ग्रंथमाला का सूत्रपात किया। इसके लिए एक संपादक मण्डल की स्थापना की गई, जिसमें उनके अलावा इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. बाबूराम सक्सेना तथा रसायन विभाग के प्राध्यापक खुद उनके पुत्र डॉ. सत्यप्रकाश जैसी साहित्य जगत की जानी-मानी हस्तियाँ थीं। इस ग्रंथमाला को **Religions Renaissance Series** का नाम दिया गया। इसके अंतर्गत उपाध्यायजी के आठ ग्रंथ छपे- **Reason and Religion, Swami Dayanand's Contribution to Hindu Solidarity, I and my God, Origion, Mission and Scope of Arya Samaj, Worship Christianity in India, Superstition, Marriage and Married life.** ये ग्रंथ 1939-1942 की अवधि में छपे और अल्प मूल्य पर पाठकों तक पहुँचाये गये। वैदिक धर्म के प्रचारार्थ उपाध्यायजी को दक्षिण अफ्रीका तथा पूर्वी एशियायी देशों में जाने का अवसर मिला था। इन यात्राओं से लौटकर उन्होंने विश्व प्रचार सीरिज के अंतर्गत अंग्रेजी में कुछ लघु आकार के ग्रंथ लिखे इनमें 'ऐलिमेन्टरी टीचिंग्स ऑफ हिन्दुस्तान' तथा 'लाइफ आफ्टर डैथ' उल्लेखनीय हैं। अंग्रेजी पठित प्रबुद्ध वर्ग तक आर्य समाज का संदेश पहुँचाने में इन दोनों ग्रंथमालाओं की भूमिका निर्विवाद रही है।

ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व एवं विचारों के विवेचन में उपाध्यायजी ने जो ग्रंथ लिखे उनमें 'फिलासफी ऑफ दयानन्द' का उल्लेख आवश्यक है। इसका प्रकाश 1955 में जब हुआ तब मैंने अपने सीमित बजट को देखते हुए भी इस महत्वपूर्ण पुस्तक को मंगाने को प्राथमिकता दी। स्वामी दयानन्द के दार्शनिक चिन्तन का विस्तृत विवेचन प्रमाणवाद, तत्वदर्शन तथा आचार दर्शन जैसे शीर्षकों में करने के साथ-साथ विद्वान् लेखक ने स्वामीजी के सामाजिक दर्शन को भी यहाँ सूक्ष्मतापूर्वक व्याख्यात किया है।

उपाध्यायजी के संस्कृत ग्रंथ- यहाँ तक हमने उपाध्यायजी के ज्ञान प्रधान साहित्य का विचार किया है। उन्होंने दो खण्डों में आर्योदय काव्य लिखा। इसके प्रथम खण्ड में भारत के अतीत इतिहास को पद्यबद्ध किया गया है। जबकि उत्तरार्द्ध ( द्वितीय खंड ) में ऋषि दयानन्द के जीवन को श्लोकबद्ध करने का सफल प्रयास है। मनुस्मृति पर उत्तम टीका लिखनेवाले उपाध्यायजी ने प्राचीन स्मृति ग्रंथों की शैली को पुनरूज्जीवित कर आर्य स्मृति शीर्षक एक अभिनव स्मृति की रचना की। यह 1959 का प्रकाश है। इसमें 25 अध्याय हैं, जिनमें वर्णाश्रम धर्म तथा आर्यों के कर्तव्यों का सरल अनुष्टुप छंदों में विवेचन हुआ है।

ज्ञानार्जन की अपरिमित पिपासा के कारण उपाध्यायजी ने स्वजीवन के उत्तरार्द्ध में एक मौलवी की सहायता से अरबी का अध्ययन किया और विधिवत् कुरान का अनुशीलन किया। इस्लाम विषयक उनका ग्रंथ 'इस्लाम के दीपक' तथा उर्दू में लिखा ग्रंथ 'मसाहिबुल इस्लाम' इस्लाम की मान्यताओं की सटीक समीक्षा है। उपाध्यायजी की इस्लम पर चली लेखनी का लोहा बड़े-बड़े मुल्ला-मौलवियों को भी मानना पड़ा था। वे उनकी आलोचना की तीखी धार, किन्तु विद्वतापूर्ण शैली से प्रभावित हुए तथा अप्रतिभ भी। उन्होंने यही कहकर चुप्पी साध ली । "कम्बख्त को जो कहना था सो कह दिा, किन्तु कहीं पकड़ में आने की गुंजाइश भी नहीं रखी।'

अंतत: गंगाप्रसाद उपाध्याय में आर्योचित शालीनता एवं महानुभावता पराकोटि की थी। वेदों के प्रमाणवाद को लेकर उनके किसी लेख की आचार्य विश्वश्रवा ने कठोर भाषा में आलोचना की, तथापित उन्होंने संयत तथा संयमित भाषा में अपने विचारों को पुन: दृढ़तापूर्वक रखा। इसी प्रसंग में मैंने अपने विचार एक लेख में उपाध्यायजी के प्रति पूर्ण समादर प्रकट करते हुए रखे तो वे अत्यधिक भावुक हो गये और मुझे पत्र में लिखा कि मैंने ( भारतीय ने ) अपने लेख में उनके प्रति जैसा आदर तथा शिष्टता दिखाई है, उससे वे बहुत प्रभावित हुए हैं। विश्वश्रवाजी का लेख कटूक्तियों से पूर्ण तिक्त शैली का था, जिससे हर किसी का आहत होना स्वाभावित था, किन्तु मेरे लिए उपाध्यायजी का व्यक्तित्व तथा कार्य आद्यन्त सम्मानास्पद रहे। यदि मैंने अपने लेख में उनके प्रति अपनी समग्र श्रद्धा प्रकट की तो इसमें अस्वाभाविक क्या था?

- डॉ. भवानीलाल भारती



अच्छी आदतों से शक्ति की बचत होती है और अवगुणों से बर्बादी, इसलिए अवगुणों से दूर रहना चाहिए। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

www.thearyasamaj.org

## स्वामी श्रद्धानन्द के 87वें बलिदान दिवस पर अविस्मरणीय समारोह

जयपुर- स्थानीय डी.ए.वी. सेन्टेनरी पब्लिक स्कूल के तत्वावधान में आर्य समाज के उज्ज्वलतम नक्षत्र स्वामी श्रद्धानन्द का 87वाँ बलिदान दिवस भावभीनी श्रद्धांजलि एवं जोशोज्वार के साथ मनाया गया। समारोह के दो चरण रहे-प्रथम 21 दिसम्बर की संध्या को भजनांजली एवं प्रवचन तथा दूसरा अगले दिन 22 दिसम्बर रविवार को प्रातः सर्वेष्टियज्ञ एवं श्रद्धाजंली कार्यक्रम। दोनों ही दिन डी.ए.वी. प्रबंधकारिणी के प्रधान श्री पूनम सूरी व श्रीमती मणि सूरी मुख्य अतिथि रहे।

शनिवार 21 दिसम्बर को सायंकाल राष्ट्रस्तरीय वैदिक प्रवक्ता वागीश जी का स्वामी श्रद्धानंद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रवचन व इससे पूर्व विद्यालय के छात्र/छात्राओं ने प्राध्यापकों के निदेशन में सुमधुर भक्ति संगीतमयी प्रस्तुतियां दी।

रविवार 22 दिसम्बर को प्रथम सत्र में प्रातः सर्वेष्टि यज्ञ प्रारम्भ हुआ। मुख्य यजमान श्री पूनम सूरी दंपत्ति बने। सर्वेष्टि यज्ञ में उपस्थित हजारों श्रद्धावानों ने भी आहुतियां अर्पित की। मध्यान्ह में विद्यालय के परिसर में ही विशाल पाण्डाल के मंच पर छात्र/छात्राओं द्वारा स्वामी श्रद्धानंद के जीवन के बलिदानी प्रसंगों पर आधारित नाटिका करतल ध्वनियों से सराही जाती रही। श्री पूनम सूरी जी की सम्मान्य भावना के अनुरूप मंच पर दायीं ओर सन्यासीवृन्द तथा बायीं ओर विशिष्ट विद्वत्जनों के आसन प्रतिष्ठित किए गए तथा महान संस्कृतज्ञ पं. कलानाथ शास्त्री विराजमान हुए।

मुख्य अतिथि एवं वक्ता पूनम सूरी जी ने अपने संबोधन में स्वामी श्रद्धानन्द के राष्ट्र एवं समाज हित में किए गए कार्यो का ही उल्लेख नहीं, अपितु आर्य समाज के बलिदानी इतिहास को भी संदर्भित किया, जिसकी अग्नि में तपकर स्वामी श्रद्धानंद 'कुन्दन' बने। साथ ही सूरी जी ने मानव जीवन में कर्म, भक्ति तथा बुद्धि का महत्व सुग्राह्य शैली में परिभाषित किया।

विशिष्टजनों की उपस्थित में राजस्थान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ. राजेश कुमार केन्द्रीय उप प्रधान टी.आर. गुप्ता, निदेशक जे. कांकरिया, आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा, राजस्थान की डी.ए.वी. संस्थाओं के प्राचार्यगण, स्थानीय आर्य समाजों के पदाधिकारी, प्रो. यज्ञदत्त जिज्ञासु सार्वदेशिक, आर्य युवक परिषद् के प्रदेशाध्यक्ष यशपाल 'यश' के नाम गिनाये जा सकते है। सर्वोपरि श्रेय तो उन सभी अभिभावकों एवं स्थानीयवासियों को जाएगा जो कार्यक्रमों में आरंभ से समापन तक एकाग्रता पूर्वक जुड़े रहे। कतिपय समाज सेवियों और गुप्तदानार्थियों द्वारा समर्पित सामग्री कम्बल एवं सिलाई मशीनें निशक्त एवं असहाय जनों को श्री सूरी एवं विशिष्ट आमंत्रितों के हाथों वितरित हुई। श्रीमती कांकरिया ने सभी जनों का आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

-ईश्वर दयाल माथुर

## वैदिक कार्यकर्ता परिवार सम्मेलन

नवलखा महल, उदयपुर में आर्य परिवारों के सदस्यों में परस्पर प्रगाढ़ सम्बन्धों में निरन्तरता सुनिश्चित करने तथा वैदिक परिवारों के सदस्यों में वैदिक संस्कृति का गम्भीर प्रसरण करने के उद्देश्य से दिनांक 22.12.2013 को यह मनोरंजक, प्रेरणास्पद सारगर्भित कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में संस्कार सम्प्रेषण के अनेक पहलुओं को स्पर्श किया गया।

महर्षि दयानन्द विद्यालय, फतेहनगर के प्रबंधक श्री सुरेश मित्तल के निर्देशन में तैयार कठपुतली शो से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। यह शो केवल मनोरंजक ही नहीं, वैदिक भजनों तथा शिक्षात्मक सम्वादों से गुम्फित होने के कारण प्रेरणास्पद भी था। वैदिक ज्ञान परीक्षा शो के उपरान्त चाय-बिस्किट के दौर के बीच परिचय होता रहा। सभी सम्भागियों को स्वाध्याय हेतु पूर्व में वैदिक साहित्य भेजा गया था। तदाधारित प्रतियोगिता प्रो. ए.एल. तापड़िया के निर्देशन में वरिष्ठ व कनिष्ठ वर्ग में चि. हिरेण गुप्ता, गौरव खण्डेलवाल, संस्कार खण्डेलवाल ने प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया। सभी को न्याय द्वारा पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर नवनीत आर्य व सुरेश पाटोदी के निर्देशन में वैदिक हाउजी का आयोजन किया गया। परम्परागत हाउजी निरर्थक व समय नष्ट करने वाली होती है, पर उक्त हाउजी में शब्दों के उच्चारण के पश्चात् सत्यार्थप्रकाश प्रथम समुल्लासस्थ ईश्वर के नाम बनते हैं। इस प्रतियोगिता में प्रथम पंक्ति, मध्यम पंक्ति, अंतिम पंक्ति तथा हाउस के पुरस्कार वितरित किए गए। यज्ञोपरांत भजन-प्रवचन के क्रम में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जयपुर से पधारे, न्यास के संरक्षक श्री.बी.एल. अग्रवाल जी ने शोयरिंग का नई पद्धति अपनाते हुए 11-12 संभागियों को साथ लेकर आर्य समाज के दश नियमों की व्याख्या की। श्री अग्रवाल का अभिनन्दन न्यास मंत्री श्री भवानीदास आर्य ने किया। कार्यक्रम संयोजक श्री नारायण मित्तल ने सभी कार्यक्रम में सुदक्षता रखी। कार्यक्रम का सफल संचालन आर्य समाज, हिरणमगरी के उपमंत्री श्री भूपेन्द्र शर्मा द्वारा किया गया। ऐसे कार्यक्रम निरन्तर होते रहने चाहिए के संदेश के साथ शांति पाठ व सहभोज के उपरांत कार्यक्रम का समपान हुआ।

-अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष

## स्वामी श्रद्धानंद का 84 वां बलिदान दिवस समारोह आयोजित

गुड़गांव। भीम नगर स्थित रामलीला मैदान के निकट आर्य केंद्रीय सभा गुड़गांव एवं आर्य समाज भीम नगर के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार को अमर शहीद स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज का 84वां बलिदान दिवस समारोह मनाया गया। इस मौके पर शोभायात्रा भी निकाली गई। समाज के लिए किए गए विशिष्ट कार्यों के लिए आर्य वेद प्रचार मंडल के प्रधान पदम चंद आर्य को विशेष तौर पर सम्मानित किया गया।

विशिष्ट कार्यों के लिए आर्य वेद प्रचार मंडल के पूर्व प्रधान पदम चंद आर्य को सम्मानित करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान आचार्य विजय पाल, पार्षद सीमा पाहुजा आदि।

आर्य केंद्रीय सभा गुड़गांव के प्रधान मा. सोमनाथ आर्य ने बताया कि शोभायात्रा का शुभारंभ आचार्य विजय पाल, धर्ममुनि जी अधिष्ठाता शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ ने ध्वजारोहण कर किया। शोभायात्रा भीम नगर से प्रारंभ होकर के आर्य वीर नेत्र चिकित्सालय, न्यू कालोनी मोड़, कबीर भवन चौक, सोहना चौक, सदर बाजार, डाकखाना चौक, न्यू रेलवे रोड होते हुए वैदिक कन्या उच्च विद्यालय जैकबपुरा में संपन्न हुई। इस शोभायात्रा का शहर में जगह-जगह स्वागत किया गया। सदर बाजार में श्री राम ज्वैलर्स के महेंद्र किशोर गोयल द्वारा स्वागत किया गया। कार्यक्रम में यज्ञ भजन एवं विद्वानों द्वारा विचार व्यक्त किये गए। कार्यक्रम के दौरान वरिष्ठ आर्य समाजी पदम चंद आर्य को उनके विशेष कार्यों के योगदान के लिए आर्य केंद्रीय सभा द्वारा सम्मानित किया गया।



अधिक से अधिक भोले, कम ज्ञानी और बच्चों की तरह बनिए, जीवन को मजे के रूप में लीजिए क्योंकि वास्तव में यही जीवन है- ओशो

www.thearyasamaj.org

कार्यक्रम में वार्ड 11 की निगम पार्षद सीमा पाहूजा व समाजसेवी पवन पाहूजा ने समारोह में लोगों से कहा कि हमें अमर शहीद स्वामी श्रद्धानंद जी के दिखाए गए मार्ग पर चलना चाहिए। यही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उन्होंने कहा कि आर्य समाज ने लोगों को एक नई ऊर्जा दी है। समाज में फैली कुरीतियों को दूर किया। उन्होंने कहा कि भारत ही नहीं बल्कि विदेशों में भी आज भी आर्य समाज के दिखाए गए मार्ग पर चल रहे हैं। कार्यक्रम के दौरान आचार्य अरविंद यज्ञ ब्रह्मा, मुख्य वक्ता आचार्य महेंद्रपाल आर्य, पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी अधिष्ठाता शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, आचार्य विजय पाल जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, पूर्वमंत्री चौधरी धर्मबीर गाबा, वैदिक कन्या हाई स्कूल के प्रधान चंद्रप्रकाश गुप्ता, भारत भूषण आर्य, शिवदत्त आर्य, राजेश आर्य, लक्ष्मण पाहुजा, सोहना, नगीना, फिरोजपुर झिरका, पिनगवां, पुन्हाना, नूंह सहित कई आर्य समाजों के गणमान्य लोग उपस्थित थे। इस मौके पर आर्ष गुरूकुल भादस के ब्रह्मचारियों द्वारा योग का शानदार प्रदर्शन किया गया। -सोमनाथ आर्य

## सार्वदेशिक आर्यवीरदल, राजस्थान प्रांत के ग्रीष्मकालीन प्रान्तीय शिविर

गतांक से आगे भवदेव शास्त्री ( प्रांतीय मंत्री )

**18. अलवर 2011**- अलवर के ही नहीं अपितु राजस्थान के शिक्षा जगत में आर्यकन्या विद्यालय अलवर का विशिष्ट स्थान है, जहां लगभग पांच हजार छात्राएँ इसकी शाखाओं में अध्ययनरत हैं। इसकी संचालन समिति 'आर्यकन्या विद्यालय समिति' सामाजिक क्षेत्र में भी सक्रिय रहती है, समिति के तत्कालीन प्रधान श्री के. एन. भार्गव, उप प्रधान अशोक आर्य सहित सभी यह प्रयास कर रहे थे कि आर्यवीरदल के एक प्रांतीय शिविर का विशाल आयोजन अलवर में किया जाए। प्रधान श्री भार्गव जी ने प्रांतीय संचालक जी से कहा कि 'सत्यवीर जी! मेरे रहते-रहते आर्यवीर दल का एक बड़ा शिविर विद्यालय में लगाओ, मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, आगे आप स्वयं समझदार हैं।' संचालक जी ने तत्काल 2011 में ग्रीष्मकालीन शिविर अलवर में लगाने की मौखिक स्वीकृति दे दी। दिनांक 14.11.2010 को ऋषि उद्यान अजमेर में तथा दिनांक 13.2.2011 को आर्य समाज जनता कॉलोनी जयपुर में आयोजित आर्य वीरदल की प्रांतीय बैठकों में इसकी पुष्टि करते हुए तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया। प्रांतीय समिति ने यह भी निश्चय किया कि इस अवसर पर आर्यवीरदल का प्रांतीय सम्मेलन भी किया जावे।

इसी निश्चय के प्रतिफल स्वरूप वैदिक विद्यामंदिर स्वामी दयानन्द मार्ग अलवर में दिनांक 28 मई से 5 जून 2011 तक 'आर्य कन्या विद्यालय समिति' के तत्वावधान में आर्यवीर दल राजस्थान का विशाल शिविर आयोजित किया गया। शिविर में अलवर से सिरोही तक तथा झालावाड़ से जैसलमेर तक सम्पूर्ण राजस्थान से 214 आर्यवीरों ने सोत्साह भाग लिया। व्यायाम शिक्षकों में प्रशिक्षण देने हेतु सर्वश्री गोवर्धन आर्य ( म.प्र. ), यतीन्द्र शास्त्री, अभिषेक, पंकज, सुशील ( अजमेर ), नीरज चौधरी ( कुचामन ), जीवनलाल ( सनवाड़, उदयपुर ), भागचंद आर्य, दिनेश आर्य ( चौंपानेरी ), दीपक व प्रमोद शास्त्री ( थानागाजी, अलवर ) पधारे।

**विशाल शोभायात्रा**- दिनांक 4 जून 2011 को वैदिक विद्यामंदिर अलवर से सायं 5 बजे शोभायात्रा प्रारम्भ हुई। शोभायात्रा में सभी जिलों के आर्यवीर अपने-अपने बैनर लेकर चल रहे थे। व्यायाम प्रदर्शन की टोलियाँ लाठी, भाला, तलवार, योगासन, रस्सामलखम्ब आदि का आकर्षक प्रदर्शन करते हुए इसकी शोभा को द्विगुणित कर रहे थे। अलवर शहर की आर्यसमाजों के अतिरिक्त जिले की सभी समाजें भी इस शोभायात्रा में शामिल हुई। शोभा यात्रा आर्यसमाज दयानन्द मार्ग, चर्चरोड़, पंसारी बाजार, घण्टाघर, होपसर्कस, बजाजा बाजार, मालाखेड़ा बाजार, विवेकानन्द चौक, बस स्टैण्ड होते हुए आर्यकन्या विद्यालय आकर सम्पन्न हुई। जगह-जगह जलपान एवं फलादि की सुंदर व्यवस्था भी की गई थी।

**समापन समारोह एवं आर्यवीरदल सम्मेलन**- 5 जून को प्रातः 6 बजे से ही सभी अधिकारी, आयोजक, प्रशिक्षणार्थी समापन समारोह की तैयारियों में जुट गए, ठीक आठ बजे मुख्य प्रांगण में समारोह आरम्भ हुआ। पूर्ण गणवेश में सुसज्जित आर्यवीरों ने संचलन ( मार्चपास्ट ) करते हुए मुख्य अतिथि को सलामी दी। तत्पश्चात् सर्वांग सुंदर व्यायाम ( पी.टी. ), जूडो-कराटे, सूर्य नमस्कार, भूमिनमस्कार, लाठी, भाला, दण्ड बैठक, योगासन, लकड़ी व रस्सा मल खम्भ, तलवार आदि का प्रदर्शन उपस्थित जन समूह के समक्ष सफलता पूर्वक किया गया। ठीक 10 बजे से आर्यकन्या विद्यालय के विशाल भवन ( हॉल ) में 'आर्यवीर दल सम्मेलन' प्रारम्भ हुआ। इसकी अध्यक्षता विद्यालय समिति के मंत्री प्रदीप आर्य ने की। सम्मेलन में जिला संचालकों में अमित आर्य ( बीकानेर ), राजूराम आर्य ( गंगानगर ), सतीश बासु ( अलवर ), रमेश गोस्वामी ( कोटा ), देवेन्द्र शास्त्री ( जयपुर ) आदि ने विचार रखे। श्री मदनमोहन आर्य गंगापुर, भवदेश शास्त्री ( प्रांतीय मंत्री ), अमरसिंह आर्य ( सभा मंत्री ), हरिपाल शास्त्री, जगदीश प्रसाद आर्य ( जखराणा ), डॉ. सुधीर शर्मा, जयपुर आदि के सारगर्भित व्याख्यान हुए। सत्यवीर आर्य ( भरतपुर ) ने काव्यपाठ किया। मंच संचालन प्रांतीय संचालक जी ने किया। अध्यक्ष प्रदीप आर्य के व्याख्यान के साथ सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में भरतपुर, सवाईमाधोपुर, कोटा, भीलवाड़ा, अजमेर, जयपुर, बीकानेर, सिरोही, पाली, नागौर, गंगानगर, जैसलमेर, बाड़मेर, उदयपुर, दौसा, चूरू, चित्तौड़गढ़, झुंझुनूं आदि 23 जिलों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

जोधपुर से श्री सम्पतराज देवड़ा एवं श्रीमती रूपवती देवड़ा अपने साथियों के साथ विशेष रूप से शामिल हुए। समारोह के बाद ध्वजावतरण किया गया। आगामी वर्ष 2012 के ग्रीष्मकालीन शिविर के लिए कोटा के संचालक रमेश गोस्वामी को ध्वज प्रदान किया गया और प्रांतीय संचालक महोदय ने शिविर सम्पन्नता की घोषणा की।

शिविर सहयोगियों में अलवर जिले की सभी आर्य समाजों के पदाधिकारी, शहर की तीनों आर्य समाजों के अधिकारी तथा आर्यकन्या विद्यालय समिति के समस्त सदस्य, अधिकारी और 'रामजीलाल आर्यकन्या छात्रावास समिति' के मान्य अधिकारीगण, छात्रावास की वार्डन, विद्यालय का स्टाफ, सब स्टाफ ( चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी ) आदि के अतिरिक्त अलवर शहर के गणमान्य प्रतिष्ठित व्यक्ति भी शामिल थे। दुःख इस बात का रहा कि इस शिविर के प्रेरणा श्रोत विद्यालय के पूर्व प्रधान श्री कैलाशनाथ जी भार्गव शिविर से कुछ पूर्व ही दिवंगत हो गए और शिविर को प्रत्यक्षतः नहीं देख पाए।

*4 जून 2011 को देहली के रामलीला मैदान में स्वामी रामदेव जी एवं उनके सहयोगी आंदोलनकारियों पर किए गए पुलिस बल प्रयोग के विरोध में आयोजित धरणों में भी आर्यवीरदल के पदाधिकारियों, व्यायाम शिक्षकों व प्रशिक्षार्थी आर्यवीरों ने जाकर अपना विरोध बल प्रयोग के खिलाफ जताया।*



**दृढ़ विश्वास से कार्य करने वाला एक कृशकाय शरीर भी इतिहास को बदल सकता है। महात्मा गांधी**

www.thearyasamaj.org

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / FN-221 / 2014 - 2016 / आर. एन. आई नं. 10471/60

# आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर

## निःशुल्क होम्यापैथिक चिकित्सा एवं परामर्श शिविर सम्पन्न

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर की ओर से आर्य समाज में निःशुल्क होम्योपैथी चिकित्सा एवं परामर्श शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 135 जन लाभान्वित हुए जिसमें डॉ. प्रितेश मेनारिया, डॉ. संध्या शर्मा के कुशल नेतृत्व में विभिन्न रोगों का परामर्श व निःशुल्क दवा का वितरण किया गया।

प्रारम्भ में डॉ. प्रितेश मेनारिया ने होम्यापेथिक चिकित्सा संबंधी विभिन्न जानकारियां दी। शिविर संयोजक डॉ. अमृतलाल तापडिया ने शिविर के आयोजन व आर्य समाज के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए शिविर का शुभारम्भ किया। समाज के प्रधान भंवरलाल आर्य, दयानन्द कन्या विद्यालय के मंत्री कृष्ण कुमार सोनी आर्य समाज मंत्री ललिता मेहरा ने स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन भूपेन्द्र शर्मा ने किया। – रामदयाल मेहरा, प्रचार मंत्री

# कार्यालय आर्य समाज शाहपुरा (भीलवाड़ा)

## अमर शहीद स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस मनाया

आर्य समाज मंदिर में दिनांक 23 दिसम्बर 2013, सोमवार को विशेष यज्ञ के साथ अमर शहीद स्वामी श्रद्धानंद का बलिदान दिवस मनाया। यज्ञ के मुख्य यजमान संतोकसिंह चौधरी, कन्हैयालाल आर्य, सत्यनारायण तोलम्बिया, चन्द्र प्रकाश झंवर थे। पुरोहित बालमुकंद बगेरवाल थे। संगठन सूक्त के मंत्रों द्वारा विशेष आहुतियां दी गयी।

स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन में बारे में प्रधान कन्हैयालाल आर्य, वरिष्ठ उप प्रधान हीरालाल आर्य, मंत्री सत्यनारायण तोलम्बिया, महिला शिक्षण केन्द्र के अध्यक्ष राजेन्द्र प्रसार सिंह डांगी, संतोक सिंह चोधरी रामधन काबरा एवं महिला शिक्षण केन्द्र के विद्यार्थियों ने अपने विचार रखे तथा बताया कि स्वामी श्रद्धानंद महर्षि दयानन्द के परम भक्त थे एवं स्त्री शिक्षा, वैदिक वर्ण व्यवस्था के प्रबल समर्थक, छुआ-छूत के कट्टर विरोधी, राष्ट्र भक्त, हिन्दु शुद्धि सभा एवं गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के संस्थापक थे। उन्होंने दिल्ली की जामा मस्जिद पर हिन्दू-मुस्लिम एकता पर प्रवचन दिया। शांति पाठ एवं जयघोष के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। – सत्यनारायण तोलम्बिया, मंत्री

# आर्य समाज अरावली विहार (काला कुआँ), अलवर

## स्वामी श्रद्धानंद का 87वाँ बलिदान दिवस अलवर शहर में मनाया

अलवर शहर की समस्त आर्य समाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थानों के सहयोग से अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद का 87वाँ बलिदान दिवस समारोह अति श्रद्धापूर्वक दिनांक 25 दिसम्बर 2013 को आर्य समाज अरावली विहार ( काला कुआँ ), अलवर में मनाया गया। दोपहर तक चले कार्यक्रम में राजगढ़, खैरथल, ईशरोदा, रामगढ़, तिजारा तथा गोविन्दगढ़ आर्य समाजों के प्रतिनिधि एवं अलवर शहर के सैंकड़ो धर्मप्रेमी भाई-बहिनों ने भाग लिया।

समारोह के मुख्य अतिथि जगदीश प्रसाद गुप्ता एडवोकेट- प्रधान आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर थे एवं समारोह की अध्यक्षता पं. अमरमुनि-महामंत्री-आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान ने की। विशिष्ट अतिथि प्रदीप कुमार आर्य-पूर्व चेयरमैन यू.आई.टी. अलवर थे।

समारोह में जगदीश प्रसाद गुप्ता मुख्य अतिथि, प्रदीप कुमार आर्य विशिष्ट अतिथि, पं. अमर मुनि सभाध्यक्ष, जगदीश प्रसाद आर्य जिला प्रधान, धर्मसिंह आर्य जिला कोषाध्यक्ष, पं. विनोदीलाल दीक्षित, अशोक कुमार आर्य, सुरेश दर्गन, आदि ने स्वामी श्रद्धानंद को भावभीनी श्रद्धाजंलि देते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानंद सच्चे देशभक्त थे जिन्होंने वैदिक संस्कृति की रक्षा करते हुए सीने पर गोली खाई। उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की, अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति आर्य प्रतिनिधि सभा को भेंट कर सन्यास ले लिया, गांधी जी को 'महात्मा' की उपाधि प्रदान की, दिल्ली की जामा मस्जिद पर वेदमंत्रों से भाषण दिया, अछूतोद्धार प्रलोभन से ईसाई तथा मुसलमान बना लिये गये हजारो हिन्दुओं को शुद्धि यज्ञ द्वारा पुनः हिन्दु बनाया, बालिका शिक्षा के लिये विद्यालय खुलवाये, जलिया वाला कांड के बाद अमृतसर में कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता की तथा दिल्ली के चांदनी चौक में रोलट एक्ट का विरोध करते समय अंग्रेज पुलिस को ललकारा व शांत किया 'जनता पर गोली चलाने से पूर्व मेरे सीने में गोली मारो।'

समारोह का संचालन धर्मवीर आर्य-मंत्री ने किया। सभी को धन्यवाद प्रधान कृष्णालाल अदलखा ने दिया। समारोह के बाद विशाल ऋषि लंगर का आयोजन हुआ। -धर्मवीर आर्य, प्रवक्ता व मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जय... मुद्रित।
सम्पादक एवं प्रकाशक अमरसिंह आर्य, मंत्री- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषक :
सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर - 302004

यू.को. बैंक A/c No. : 18830100010430 तिलक नगर, जयपुर

प्रेषित



विशेष – आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों मे व्यक्त विचार लेखकों के अपने है। उनसे संम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।